Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 69-70, Jan-Feb 2021

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
(विशेषज्ञ समीक्षित)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
वर्ष 6, अंक 69-70, जनवरी-फरवरी 2021

संवेदना और सरोकारों की शिल्पी: उषाकिरण खान
('उषाकिरण खान : संकलित कहानियाँ' के विशेष संदर्भ में)

डॉ. अंजु
सहायक आचार्य, हिन्दी
राजकीय कन्या महाविद्यालय, अजमेर
मो. नं. - 7976229898
ई-मेल: dranjukalyanwat@gmail.com

शोध सारांश

हिंदी और मैथिली में समान रूप से सतत सृजनरत उषाकिरण खान जी ने गद्य साहित्य की विविध विधाओं में समान दखल रखते हुए कथाकार के रूप में साहित्य जगत में विशिष्ट पहचान बनाई है। अपनी माटी , जड़ों एवम् परिवेश से गहरे जुड़ाव और संवेदनशील पारखी दृष्टि के कारण अपने आसपास के परिवेश में व्याप्त समस्याओं , विसंगतियों, हाशिये पर धकेल दिए गए वर्ग और स्त्रियों के अस्मिता व पहचान स्थापना के संघर्ष को यथार्थता के साथ उठाया है। बोझिल बनावटीपन से परे हटकर मानवीय संवेदनाओं और सरोकारों से गहरे जुड़ाव की बानगी 'उषाकिरण खान : संकलित कहानियाँ 'संकलन में देखने को मिलती है। प्रस्तुत आलेख में इसी संकलन को केंद्र में रखकर उषाकिरण खान जी के लेखकीय सरोकारों पर बात की गई है।

बीज शब्द: *सामाजिक सामंजस्य , सामरस्य , मानवीय संवेदना , संवेदनशीलता , विसंगतियाँ , संघर्षशीलता , प्रतिबद्धता , ग्रामीण परिवेश , सांस्कृतिक परंपरा।*

आमुख-

डॉ. उषाकिरण खान उपन्यास, कहानी, नाटक और बाल नाटक रचना में अपनी विशिष्ट दखल और पहचान रखती हैं। पद्मश्री सहित अनेक लब्धप्रतिष्ठित सम्मानों से समादृत होना, इनके शैक्षिक और लेखकीय अवदान की कहानी स्वयं कहते हैं। विद्वता, शोध, सामाजिक सामंजस्य और संवेदनशीलता का अद्भुत सम्मिश्रण इनकी रचनाओं में सहज ही दिखाई पड़ता है। इसी क्रम में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा इनकी चुनींदा कहानियों का संकलन 'उषाकिरण खान: संकलित कहानियाँ' नाम से प्रकाशित किया गया। इस संकलन की कहानियों में मानवीय संवेदनाओं के विभिन्न रूप मन को छूते हुए अभिव्यक्ति पाते, मन को मथते-आलोड़ित करते हुए कहीं-कहीं कई अनुत्तरित प्रश्न पाठक के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ जाते हैं। जो लेखिका के अपने परिवेश से व्यापक जुड़ाव और सूक्ष्म लेखकीय पारखी नज़रों का प्रमाण हैं। भाषायी संवदेना और शिल्प का परिपूरक रूप कहानियों की सम्प्रेषणीयता को अधिक प्रभावशाली बना देता है।

हिन्दी और मैथिली भाषा को अपनी सृजनात्मक लेखनी से समृद्ध बनाने वाली रचनाकार उषाकिरण खान ने कहानियों में समाज के हाशिये पर जीवन व्यतीत करते दमित - शोषित वर्ग की विसंगतियों, प्रगतिशील समाज का विभत्स दोगला रूप, धर्म-जाति तथा लिंगाधारित भेद से उपजी असंगतियों, स्त्री-जीवन की संघर्षशीलता एवं मानवीय संवेदनाओं को गहराई से उकेरा है।

उषाकिरण खान ने कहानियों में मिथिलांचल के गाँव-गुवाड़, माटी और लोक - संस्कृति में सामाजिक वैषम्य के मध्य आशा भरी लौ से अविचल टिमटिमाते धार्मिक सामरस्य, ग्रामीण स्त्री के संघर्ष के विविधि रूपों, संवेदनशीलता को परत-दर-परत सूक्ष्म बयानगी प्रदान की है। जिसमें कथ्य और शिल्प दोनों ही स्तरों पर लेशमात्र भी बनावटीपन नहीं मिलता है। मिलता है तो बस मानवीय संवेदनाओं और सरोकारों का बहता सोता। जो पाठक को झकझोरते हुए प्रश्नाकुल बना अथ से इति तक बाँधे रखता है। मैथिली का परिवेश और पात्रानुकूल सहज प्रयोग कहानियों की संप्रेषणीयता को प्रभावी बना देता है। भाव और भाषा एकमेक हो पाठक की संवेदनाओं को झकझोरती है। कहानियों का विषय वैविध्य , लेखिका का मानवीय सरोकारों से व्यापक जुड़ाव, समय की नब्ज पर पैनी दृष्टि और संवेदनशीलता को दर्शाता है। उषाकिरण खान की लेखकीय प्रतिबद्धता के संदर्भ में रचनाकारों के लेखन - कर्म पर डॉ. बीना शर्मा की टिप्पणी उल्लेखनीय है, ‘‘लेखक या लेखिका का परिवेश ही उसकी सर्जना का प्रेरक तत्त्व होता है। वह अपने परिवेश से अनेक रूपों से जुड़ा रहता है। कभी वितृष्णा से तो कभी उसका हिस्सा बनकर। जन-जीवन और परिवेश के प्रति प्रतिबद्धता ही रचनाकार को सामाजिक सरोकारों से जोड़ती है। रचनाकार अपने अनुभव, विवेक, परिवेश और जीवन के प्रति जितना ही प्रतिबद्ध होता है उसकी रचना उतनी ही सशक्त, जीवंत और प्रामाणिक होती है।’’1 यह सभी विशेषताएँ उषाकिरण खान की कहानियों में मिलती हैं।

‘पाखंड-पर्व’, ‘अम्माँ, मेरे भैया को भेजो री, कि सावन आया’, ‘हमके ओढ़ा दी चदरिया हो, चलने की बेरिया’, ‘दूब-धान’, ‘मौसम का दर्द’, ‘नीलकंठ’, ‘पाथर-मन’ आदि कहानियाँ मिथिलांचल के ग्रामीण परिवेश, सांस्कृतिक परम्परा और समस्याओं को बारीकी से टटोलती है।

‘अम्माँ, मेरे भैया को भेजो री, कि सावन आया’ कहानी में कोसी की बाढ़ में काँवड़ियों को बचाते हुए अपनी जान गँवा मानवता की अनूठी मिसाल पेश करनेवाले इशहाक शेख का शिक्षित बेटा आतंकियों से मिल निर्दोषों की जान ले लेता है। टीवी में अपने भाई के हाथों निर्दोष लोगों की मृत्यु की खबर देख रजिया की आत्मा आर्त्तनाद कर उठती है। कितनों का सावन लील गया उसके भाई अजीज शेख का यह कृत्य, ‘‘नम माटी की महक की कसम लेती है रजिया, भाई मिलेंगे तो पूछूँगी - कितनों के सावन को जलाकर राख कर डाला, हर दिल अजीज शेख ? काँवड़ियों को बचाने में डूब जाने वाले इशहाक शेख का जाया ! ” 2

उषाकिरण खान ने ‘कौस्तुभ स्तंभ’ कहानी में प्रकृति के विभत्स तांडव प्रलयंकारी बाढ़ की विनाशलीला से त्रस्त एवं अपने ही चुने हुए नेताओं और प्रिंट मीडिया की मिलीभगत के दो पाटों में पिसती जनता की दयनीय विवशता सोचने को बाध्य करती है। यह कैसा लोकतंत्र है ? सत्तासीन नेता अपने उत्तरदायित्वों से विमुख हो निर्द्वन्द्व भाव से सत्ता -सुख भोगते हैं। राजनेताओं की कलई खोलता देवी माँ का यह कथन दृष्टव्य है, ‘‘ हुँह, अपने लोगों की चुनी हुई सरकार। अपना नुमाइंदा, एक नाव तक नहीं, कोई खोज - खबर नहीं। जरूरत क्या है उसकी। हेलीकॉप्टर से सड़े हुए पाव-रोटी पानी में छपाक से गिरा देने भर से ही उनके कर्त्तव्यों की इतिश्री हो जाती है। बाकी का काम अखबार वाले कर देते हैं - काफी राहत सामग्री बाँटी गई। सब ठीक है।‘‘

खेतों से निकले अनाज जैसे पॉलिथिन पैकेटों में पॉलिश होकर बड़े शहरों के जनरल स्टोर्स में शोभायमान होते हैं, उसी तरह इस मिट्टी से जनमें बढ़े-चुने नए नेता राजधानियों की मखमली कुरसियों पर विराजमान हो जाते हैं। पलटकर देखें क्यों, कींच-कादो लग जाने का भय है।''3

गाँव से कहानी-यात्रा शुरू कर पत्रकारिता, लेखन-क्षेत्र में पुरस्कारों की बंदरबाँट, गम्भीर लेखक की उपेक्षा, पुरातात्विक-स्थल की खुदाई जैसे छुए-अनुछुए विषयों से गुजरते हुए 'घर से घर तक' में गुयाना और भारत के मध्य प्रवासी पीढ़ियों की लम्बी यात्रा तय कर लेखकीय सरोकारों के विशाल फलक को छूने की उषाकिरण के सराहनीय प्रयास पर महिला-लेखन के विषय में मधुरेश जी का यह कथन दृष्टव्य है - 'महिला-कथाकारों की यह दुनिया ढर्रेवादी दुनिया से बहुत भिन्न और व्यापक है जिसे अब तक महिला - लेखन के नाम से जाना जाता रहा है। इसमें सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि अपनी अंतर्वस्तु के विस्तार की चिंता और चेतना उसमें सब कहीं लक्षित होती है। वस्तुतः यह चेतना ही उसके क्रमशः विकसित होते अनुभव -विस्तार का मूल कारक भी है। इस दुनिया से साक्षात्कार का मतलब है एक बहुत व्यापक और खुली हुई दुनिया से साक्षात्कार जिसे किसी प्रकार की भौगोलिक चौहद्दी में बांधकर रख पाना मुश्किल है।''4

'पत्रकारिता की रस्म' लेखिका की व्यापक सरोकारों की बानगी प्रस्तुत करती बेहतरीन कहानी है। इस कहानी में पत्रकारिता के व्यवसायीकरण और खोजी पत्रकारिता के छद्म का खुलासा किया है। ' पाखंड-पर्व' कहानी में गाँव की घृणित, कुत्सित और भ्रष्ट राजनीति का सूक्ष्म अंकन हुआ है। गाँव में वर्षों से स्थापित सरपंच शंभू बाबू गाँव में उसके शोषण-चक्र तले पिसते लोगों के लिए शिक्षा, भोजन और स्वास्थ्य से जुड़ी मूलभूत सुविधाएँ जुटाने वाले सुंदर बाबू के ऊपर गाँव की युवा बहू पर बलात्कार का झूठा आरोप लगाकर पंचायत में बेईज्जत कर गाँव से बेदखल करने का प्रयास करता है। वह युवा पीढ़ी को नशे की लत लगाकार अपने हथियारबंद लोगों के बल पर ग्रामीणों को भयभीत करता है। विधवा रूकिया को झूठी गवाही देने को बाध्य करता है, पर वर्षों से उसकी प्रताड़ना और शोषण की शिकार निम्नवर्गीय रूकिया पंचायत में न्याय का पक्ष लेकर शोषण के विरूद्ध जागरूक रहने और शोषकों के अन्याय के खिलाफ विद्रोह की मिसाल कायम करती है, ''मार डाल, बेटा को सिखा-पढ़ाकर चोर-उचक्का बना दिया। पतोऊ को सब मिलकर भोग लगाते हो। क्यों पाप चढ़ाते हो। नहीं - नहीं, मैंने कभी किसी समय सुंदर बाबू को अपने घर-आँगन में नहीं देखा। मार डाल मुझे, ले मार !''

दिवानी की तरह रुकिया ने झुल्ला (ढीला ब्लाउज) फाड़ सीना आगे कर दिया, बुधना श्यामा की ओर बढ़ी। पंचायत की चुप्पी टूट गई। शोर-गुल होने लगा।''5

'कुंदन' कहानी में ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ, अनुशासनप्रिय और समर्पित शिक्षिका डॉ. विद्युतपर्णा सरकारी सेवा के अंतिम वर्षों में ईमानदारी के कारण रिश्वत से वंचित अधिकारियों और अधीनस्थों द्वारा उन्हीं की एक विद्यार्थी के माध्यम से झूठा आरोप लगा न्यायालय में घसीटी जाती है। इसके माध्यम से लेखिका ने लंबी, लचर और दुरुह न्यायिक प्रक्रिया की भेंट चढ़ते ईमानदार व्यक्तियों की पीड़ा को विद्युतपर्णा के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। जिसके कारण न्याय की गुहार लगाते डॉ. विद्युतपर्णा जैसे ईमानदार लोग न्याय-व्यवस्था में आस्था रखते हुए भी अपने निर्दोष होने के फैसले की प्रतीक्षा करते-

करते आत्मा पर झूठे आरोप का बोझ लिए चिरनिद्रा में सो जाते हैं, ''लपटें ऊँची-ऊँची जा रही है। चारों ओर उनके माली, दरबान, दाई, खड़े हैं। उन्होंने ही संस्कार दिया था। फैसला सुनने की प्रतीक्षा डॉ. विद्युतपर्णा नहीं कर सकी। वे सभी फैसलों से ऊपर चली गई।''6

'दूब-धान' कहानी सर्वधर्म समभाव एवं सामाजिक सामरस्य को पिरोये लोक-संस्कृति के चटख रंगों को सहेजती कहानी है, ''उसे याद आता है कैसे इस्लाम धर्म मानते हुए भी सबुजनी जीतिया और छठ करती थी। छठ की डलिया में सिर्फ फल-फूल देख एक बार केतकी ने टोका तो उसने कहा था, ''मैं मुसलमान हूँ न, मेरे हाथ का पकाया हुआ भोजन सूर्य देवता कैसे करेंगे, इसलिए फल-फूल लेकर अर्ध्य चढ़ाती हूँ।''

''ऐसे देवता को क्यों अर्ध्य चढ़ाती हो जो तुम्हारे मुसलमान होने के कारण छूत मानते हैं ? मत चढ़ाओ।'' केतकी ने आवेश में कहा था। जीभ काटकर कान पकड़ते हुए सबुजनी ने ऐसा बोलने से मना किया और डाँट भी बताई। कहा, ''छिमा माँग लो, देवता-पितर के बारे में ऐसा नहीं कहते।''7 उदात्त भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और जन संवेदना का अति संवेदनशील पक्ष का मानवीय मनोभूमि पर सुंदर अंकन इस कहानी में हुआ है।

'नटयोगी' पॉलीथिन की छत के नीचे जन्में, पले-बढ़े बच्चों और उनके परिवार के आर्थिक संघर्षों की मार्मिक कहानी है। ''आज भर की बात है, कोशिश कर ले।''

''कर ले।''

लँगड़ाते हुए उठे दोनों तैयार होने के लिए। अम्माँ के चेहरे पर क्षण भर के लिए पीड़ा उभरी, फिर गायब हो गई। पीड़ा का स्थान संतोष ने ले लिया। पिता उमंग से लबरेज था, बेटों ने योग साध लिया है, अब दुख दूर हुए।'' 8 भूख और गरीबी की त्रासद मार अल्पव्यस्क बच्चों को समय से पूर्व उनका बचपन छीन, प्रौढ़ों-सा समझदार, जिम्मेदार और कमाऊपूत बन जाने को विवश कर देती है। देश का भविष्य कहलाने वाले ये बच्चे पॉश कॉलोनी के निकट रहकर भी शिक्षा के प्रकाश से कोसों दूर वंचित-जीवन जीने को विवश है। कैसी विडम्बना है ?

अपने ही घर में बेटे-बहू की उपेक्षा का दंश झेलते वृद्ध को स्मृति-लोप हो जाने पर उत्कृष्ट साहित्यिक-लेखन के लिए सम्मानित किए जाने की विसंगति को लेखिका ने 'मोती-बे-आब' कहानी में पूर्ण संवेदना से उकेरा है। विसंगतिपूर्ण सरकारी नीतियों को इस संवाद में तल्ख स्वर में दर्शाया गया है, ''समय रहते पुरस्कार देना चाहिए। यह क्या कि लेने वाला जान भी न पाए। इसका कोई मतलब नहीं है।''

''सरकार अपनी पीठ ठोंकने के लिए यह सब करती है।''

'साबूत मूरत' कहानी का संवेदनशील मजदूर हनीफ माटी की मूरत में भी अपनी दिवंगत माँ का अक्स देखता है और उसे माँ का-सा ही सम्मान देता है। माँ के प्रति घनीभूत संवेदनाएँ उसे मूर्ति से जोड़ती है और उस मूर्ति से अतिरिक्त रूपये मिलने का लालच उमड़ती संवेदनाओं के उफान में तिरोहित हो जाता है, ''थरथरा रहा है हनीफ - अम्माँ मेरी अम्माँ। नहीं इसकी मुँह माँगी कीमत नहीं लूँगा। यह .....

यह अपने पटना में, जादूघर में रहेगी, डॉ. विश्वास को दूँगा। निकाह के बाद हम और जैनब पौरी पौना करेंगे जाकर ; मूरत कलेजे से सटाकर दौड़ पड़ा हनीफ। अंतर्मुख सीधा-सा गंभीर हनीफ अपनी हजारों साल की धरोहर राजकीय संग्रहालय को समर्पित कर देगा। अपनी संपूर्ण निष्ठा के संग उसे अपनी अम्मीजान के तख्त पर अपने दिल में बिठा के रखेगा।''9

'उषाकिरण खान ; संकलित कहानियाँ' पुस्तक की भूमिका से उद्धृत गोपाल राय का यह कथन द्रष्टव्य है, ''एक संवेदनशील लेखिका और नारी होने के कारण उषाकिरण खान का नारी संवेदना से गहरा भावनात्मक लगाव है, जो उनकी कहानियों में परिलक्षित होता है।''10 उच्च वर्ग की सुविधा-सम्पन्न जिंदगी जीती महिलाओं की आंतरिक पीड़ा के महीन रेशों को उधेड़ते हुए उषाकिरण जी ने भौतिकवादी जीवन में आत्मीय रिश्तों की निकटता की प्यास के दूसरे पहलू को भी गहराई से उकेरा है। जो हृदयतंत्री को झकझोर देता है। जिसका प्रभाव देर तक पाठक के मनोमस्तिष्क पर बना रहता है। 'जनम अवधि हम रूप निहारल' कहानी, आकर्षक शीर्षक के साथ निःस्वार्थ प्रेम और सरलमना पत्नी की पति का साहचर्य प्राप्ति के कुछ क्षणों की अटूट प्रतीक्षा से जुड़ी गहनतम अनुभूति की कहानी है। नारी-संवेदना का चरमोत्कर्ष तो तब छू जाता है, जबकि यह प्रतीक्षा मृत्योपरांत भी निर्जीव देह में बनी रहती है, '' वह धीमे स्वर में राज खोल रहे थे - '' यामा की आँखे पूरी खुली थीं - कजरारी, पथराई, प्यासी-सी । मैंने नर्स की ओर देखा। उसने बताया कि कई बार कोशिश करने पर भी आँखे बंद नहीं हुई। मैंने नर्स और आया को बाहर चले जाने को कहा। दरवाजा अंदर से बंद कर दिया। अपनी बालसखी यामा के चेहरे को असंख्य चुंबनों से भर दिया। मेरी आँखों के आँसू उसकी आँखों में उतर आए। मैंने उसकी प्रतीक्षित पलकों को चूमा। तुम्हें पता है, उसकी घनी बरौनियों वाली पलकें आपसे आप बंद हो गई।'' सात्विक प्रेम की प्रतीक्षा आत्मा के देह-त्याग दिए जाने पर भी बनी रहती है। स्त्री - प्रेम का श्रेष्ठतम रूप जो वंदनीय है। समस्त स्वार्थों से परे निश्छल प्रेम - जिसमें पूर्ण निष्ठा और समर्पण है।

उषाकिरण खान की कहानियों से गुजरते हुए लगता है जैसे लेखिका की कहानियों में स्त्री-जीवन और स्त्री-विमर्श के परंपरागत ढर्रे टूट रहे हैं। उपेक्षित और प्रताड़ित स्त्री के जीवनयापन और अभिव्यक्ति का बंधा-बंधाया तिलिस्म टूट रहा है। इस दृष्टि से 'आँखे स्निग्ध तरल और बहुरंगी मन', 'घर से घर तक', 'नीलकंठ', 'कौस्तुभ स्तंभ', ' एक है जानकी', 'मौसम का दर्द', 'पाथर-मन', आदि कहानियाँ उल्लेखनीय हैं।

'कौस्तुभ स्तंभ' कहानी में उषाकिरण खान ने मंगल बहू और देवी माँ के माध्यम से स्त्री-विमर्श का नवीन आयाम दर्शाया है। मंगल - बहू ग्रामीण स्त्री होकर भी पति की मृत्योपरांत अदम्य जीवट के सहारे परिवार को पालती है। वहीं दूसरी ओर देवी माँ शहर की समस्त भौतिक सुविधाओं को तिलांजली दे ग्रामीणों की हितसाधना के लिए अपना जीवन समर्पित कर देती है। लेखिका ने कोसी की बाढ़ में घिरी इन दोनों की विगत स्मृतियों की यात्रा के सहारे स्त्रियों के संघर्षशीलता के गुण को बखूबी उभारा है। 'एक है जानकी', में पति चालबाजी से जानकी को धोखा देकर उसके स्थान पर अन्य स्त्री को अदालत में खड़ा कर तलाक ले दूसरा विवाह कर लेता है। दूसरे विवाह के कानूनी रूप से अवैधानिक घोषित होने एवम् पति की सरकारी नौकरी पर संकट आने पर पीहरवालों के विरूद्ध जाकर दृढ़निश्चयी जानकी पति

के पक्ष में गवाही देती है। ऐसा साहसिक कदम उठा वह अघोषित वैधव्य के चोले को त्याग कुमारी कन्या के समान जीवन जीने का निर्णय लेती है। इसके माध्यम से लेखिका ने संवेदनशील स्त्री के जीवन से जुड़े स्त्री-विमर्श का अछूता पहलू हमारे समक्ष उजागर करती हैं। जो स्वतंत्रतापूर्वक, स्वेच्छानुसार भावी जीवन को उमंगपूर्वक, सभी वर्जनाओं से मुक्त होकर जीने का हौंसला देता है, ''भतीजे की बहू कह रही थी,'' बुआजी, तलाक के बाद बेटी फिर अपने पिता के घर की हो जाती है। वही पदवी, वही गोत्र यानी कुमारी कन्या, समझी ना। आजकल लड़कियाँ विवाह भी करती है।'' अनायास जानकी को ये शब्द स्मरण हो आए। हँसी आ गई उसे। अर्थात् बाबूजी ने जो जो कन्यादान किया था, वह लौट गई। दान की हुई वस्तु लौटने लगी। वाह ! लेकिन एक बड़ी अच्छी बात हुई, जब तक जीऊँगी, चूड़ियाँ पहनूँगी, मछली खाऊँगी। ठहाका -सा लगाया जानकी ने। मतलब, मतलब वैधव्य का घोर मर्मांतक दंश नहीं सहूँगी।''11

'मौसम का दर्द' कहानी में कोसी किनारे गाँव में पदस्थापित ओवरसियर बाढ़ग्रस्त गाँव में अल्हड़ ग्रामीणबाला अड़हुल से शारीरिक संबंध स्थापित हो जाने पर ओवरसियर उसके प्रति आकर्षण को नकार पूर्व में विवाहित अड़हुल इस क्षणिक संबंध को भूल राजी-खुशी विदा लेने आती है। उसके मन में कहीं भी उस कृत्य के प्रति न तो मलाल है और न इस संबंध के प्रति कोई आकर्षण, ''अरे, हा-हा-हा..... हाय राम, राह चलते पियास लगे बाट-घाट के कुएँ से पी नहीं ले आदमी पानी, की घर आकर पानी पीने के सोच में हलकान होवे। रात का मसिस था आग और खढ़ एक ढैंया हुआ लेस दिया। जाइए बाबू, आप मरद होकर तिरिया-चरित्तर दिखाते हैं। असीरबाद दीजिए। राजी खुशी जाएँ।''12 अड़हुल नवीन जीवन दृष्टि से सम्पन्न लड़की है। जो क्षणिक संबंधों को बोझ दिल पर नहीं रखती और वर्तमान में जीती है। जो बीत गई वो बात गई। देह शुचिता की वर्जना को तोड़ती अड़हल स्त्रीयोचित भावुकता से मुक्त स्त्री-विमर्श का नवीन पक्ष सामने रखती है।

निष्कर्ष - उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट कि उषाकिरण खान की कहानियों में व्यापक भाव-बोध, मानवीय संवेदना और सामाजिक सरोकारों की अभिव्यक्ति हुई है। इन्होंने अपने परिवेश में गहरे से पैठकर संवेदनाओं के बहुरंगी रूपों को और विशेष रूप से स्त्री-जीवन की सच्चाइयों से रूबरू कराने का स्तुत्य प्रयास किया है। जिसमें उन्हें अपेक्षित सफलता भी मिली है।

संदर्भ - सूची

1. डॉ. बीना शर्मा - साहित्य के विविध रंग और सरोकार पृ. 68, प्र.सं.2019, गीतांजलि प्रकाशन , चौड़ा रास्ता , जयपुर-302003

2. उषाकिरण खान - अम्मा, मेरे भैया को भेजो री, कि सावन आया, उषाकिरण खान: संकलित कहानियाँ ,पृ. 5 , पहली आवृत्ति 2017 , राष्ट्रीय पुस्तक न्यास , नई दिल्ली -110070 ,

3. उषाकिरण खान - कौस्तुभ स्तंभ, उषाकिरण खान: संकलित कहानियाँ, पृ. 130, पहली आवृत्ति2017, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली - 110070

4. मधुरेश - हिन्दी कहानी: अस्मिता की तलाश,पृ. 118- 119, प्र.सं. 1997 , आधार प्रकाशन , पंचकूला – 134109

5. उषाकिरण खान - पांखड-पर्व, उषाकिरण खान: संकलित कहानियाँ, पृ 73 ,पहली आवृत्ति 2017, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास , नई दिल्ली-110070

6. उषाकिरण खान - कुंदन, उषाकिरण खान: संकलित कहानियाँ, पृ. 81, पहली आवृत्ति 2017 ,राष्ट्रीय पुस्तक न्यास , नई दिल्ली-110070

7. उषाकिरण खान - दूब-धान, उषाकिरण खान: संकलित कहानियाँ , पृ. 53, पहली आवृत्ति 2017 , राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली-110070

8. उषाकिरण खान - नटयोगी, उषाकिरण खान: संकलित कहानियाँ,पृ.12 , पहली आवृत्ति 2017 , राष्ट्रीय पुस्तक न्यास , नई दिल्ली -110070 ,

9. उषाकिरण खान - साबूत मूरत, उषाकिरण खान: संकलित कहानियाँ , पृ.120 , पहली आवृत्ति 2017 राष्ट्रीय पुस्तक न्यास , नई दिल्ली-110070

10. उषाकिरण खान: संकलित कहानियाँ की भूमिका से उद्धृत, पृ. सात , पहली आवृत्ति 2017 , राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली-110070

11. उषाकिरण खान - एक है जानकी, उषाकिरण खान: संकलित कहानियाँ, पृ 34-35, पहली आवृत्ति 2017 , राष्ट्रीय पुस्तक न्यास , नई दिल्ली- 110070

12. उषाकिरण खान - मौसम का दर्द, उषाकिरण खान: संकलित कहानियाँ , पृ .92 , पहली आवृत्ति 2017 , राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली -110070